Research Paper Library Science

Distance Education and Public Library

दूरवर्ती शिक्षा और सार्वजनिक ग्रंथालय

* Jay Ram.H. Desai

* A scroller of singhaniya university, Singhaniya university, Pacheribari- Rajasthan

Keywords:

सार्वजनिक ग्रन्थालय हर एक मनुष्य को स्वतंत्र रुप से विचार करनेकी प्रेरणा देता है । हमेशा ज्ञानका प्रचार-प्रसार करनेवाला तथा वैचारिक प्रवाह को प्रसारित करनेवाला सुव्यवस्थित ग्रन्थालय तंत्र समाज के हर एक व्यक्ति के लिए नि:शुल्क सेवा प्रदान करता है । सार्वजनिक ग्रन्थालय के जरिये मिलनेवाली सेवाके जरिए समाज की विभिन्न सामाजिक समस्याऐं जैसे कि जन विस्फोट, गरीबी, बेकारी और निरक्षरता के प्रति हम जागृत होते है ।

२१ वीं सदी में शिक्षा के सार्वजनिक विस्तार का फैलाव करके सुदृढ करना जरुरी है । इसके लिए नई शिक्षा नीतिके संदर्भ में दूरवर्ती शिक्षा एवं खुले विश्व विद्यालयों के कार्य और उद्देश्योंकी पूर्ति के लिए सार्वजनिक ग्रन्थालयोंकी शैक्षिक भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण है ।

नई शिक्षा नीतिमें दूरवर्ती शिक्षाको ज्यादा महत्त्व दिया गया है । और इसके फल स्वरुप शिक्षाकी प्रणाली में विद्यार्थियोंको शिक्षा प्रदान करनेकी प्रक्रिया में बहुत बडा परिवर्तन देखनेको मिला है । आजकल शाला, कोलेज या विश्व विद्यालयों में जिस तरह से शिक्षाकार्य चलता है उसमें शिक्षा और विद्यार्थियों में आंतर प्रत्यायन होता नहीं है । विद्यार्थियों की ज्ञान प्राप्ति में शिक्षकोंका बहुत बडा योगदान रहा है । किन्तु बहुत बडी जन संख्याको शिक्षा देने में हम दूर-दराज गाँवों और जन-जन तक पहुँच सकते नहीं तथा शिक्षकों एवं साधन सामग्री में बहुत बडा खर्च करना बहुत ही मुश्किल है इसलए शिक्षाकी प्रणाली में नया मार्ग यानि दूरवर्ती शिक्षाको हम ज्यादा महत्त्व देते है । दूरवर्ती शिक्षाकी भूमिका ग्रन्थालयोंको अदा करनी है । जो विद्यार्थी बिना शिक्षक स्वयं शिक्षा प्राप्त करके अभ्यास करते है उन सबको ग्रन्थालय पर आधार रखना बहुत ही जरुरी है । इसलिए ग्रन्थालयों को दूरवर्ती शिक्षामें महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करनी पडती है ।

दूरवर्ती शिक्षाको आम जनता तक पहुँचाने के लिए सार्वजनिक ग्रन्थालय प्रबल माध्यम है । सार्वजनिक ग्रन्थालयकी प्रधान: तीन सेवा है (१) बाल ग्रन्थालय सेवा (२) संदर्भ सेवा (३) गतिशील पुस्तकालय सेवा । इन तीनों ग्रन्थालय सेवाओंके कार्यक्षेत्रका विकास करने से समाजमें एवं दूरवर्ती शिक्षामें प्रभावी रूपसे सुधार ला सकते है ।

(१) बाल ग्रन्थालय सेवा :
आजका बालक भावि नागरिक है । उसे मद्देनजर रखकर उनकी सर्जनात्मक विचारशक्तिको विकसित करनेमें उपयोगी हो सके ऐसे खिलौने, दृश्य खेल, शैक्षिक खेल आदि आधुनिक साधन सामग्री बाल ग्रन्थालयमें बसानी चाहिए मनोरंजन कार्यक्रम, वार्तालाप, काव्यवाचन, नाटक लेखन और चित्र स्पर्धा और टी.वी के माध्यमसे उनको शिक्षा देनेकी सुविधा करनी चाहिए ।

(२) संदर्भ विभाग सेवा :
सार्वजनिक ग्रन्थालयो में ज्यादा से ज्यादा उपयोगी संदर्भ ग्रंथ हमेशा के लिए प्राप्त हो वह जरुरी है । जिनके जरिये संदर्भ सेवाको और भी संगीन बना सकते है । ''कोई भी जानकारी यहाँ से मिलेगी'' । एसा कहनेकी और करनेकी क्षमता सार्वजनिक ग्रन्थालयों में व्यवस्थित रुप से विकसित करनेकी जरुरत है । एसा होगा तब समाजको सार्वजनिक ग्रन्थालय अपने खुदके लगेंगे । वाचक वर्ग संदर्भ विभागका ज्यादा से ज्यादा उपयोग करे इसलिए समय (अवधि) वाचकों को अनुकूल रहे इस तरह व्यवस्था करनी चाहिए ।

(३) चल (गतिशील) पुस्तकालय सेवा :
दूरवर्ती शिक्षा पद्धति में छोटे गाँवसे लेकर शहरकी हरएक व्यक्ति साक्षर बनें वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । इसके लिए चल पुस्तकालयके जरिए वाचकों को पुस्तके और अन्य वाचन सामग्री प्राप्त हो सके तथा उन सबको वाचन की आदत हो जाए ऐसी कोशिश करनी जरुरी है ।
आजके तकनीकीके युगमें दूरदर्शन के जरिए कृषि विषयक, आरोग्य और स्वास्थ्य विषयक, कुटुंब कल्याण, बाल सुरक्षा, सांस्कृतिक विरासत और आबोहवा आदि जैसी जीवन उपयोगी जानकारी दूरदर्शित होती है । जिसके जरिए गाँवकी जनता में समझ विकसित होती है । और जागृति आती है । सार्वजनिक ग्रन्थालयों के विस्तरण कार्य में दूरदर्शन के जरिए दूरदर्शित होते कार्यक्रम मददरूप बनते है । इस जानकारीको ग्रन्थालयकी वाचन सामग्रीके जरिए सघन और सुदृढ बनाया जाए और जिलाकक्षा तक चल पुस्तकालयके जरिये दूरदर्शन कार्यक्रमको पुन: वीडियो केसेट के जरिए प्रदर्शित कर सकते है । दूरवर्ती शिक्षा सुविधा में संलग्न विद्यार्थियोंको ग्रन्थालय सेवा प्रदान करने हेतु सार्वजनिक ग्रन्थालयों के पदाधिकारियों को सुव्यवस्थित तालीम देनी जरुरी है । जिससे सार्वजनिक ग्रन्थालयों के विद्यार्थियों के लिए स्वयंशिक्षा पानेका एक महत्वपूर्ण साधन बना रहे ।
दूरवर्ती शिक्षा व्यवस्था में दो पद्धतियों से शिक्षा देनेका प्रावधान है । (१) पत्राचार के जरिए (२) खूले विश्वविद्यालयों के जरिए ।

(१)पत्राचार के जरिए शिक्षा :
पत्राचार द्वारा शिक्षा पद्धति में विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमकी इकाईके मुद्दे दिए जाते है । इसके लिए विद्यार्थियों को स्वाध्याय लिखकर तय किए हुए खुले विश्व विद्यालयको भेजने पडते है । इस पाठ्यक्रममें हिस्सा लेनेवाले विद्यार्थियोंको मार्गदर्शन देने के लिए सार्वजनिक ग्रन्थालयके ग्रन्थपालों और अन्य कर्मचारीओंको शिक्षाकी बजाय विद्यार्थियोंको अभ्यास संलग्न वाचन सामग्री देनेकी जिम्मेदारी निभानी पडेगी ।

(२)खुले विश्व विद्यालय के जरिए शिक्षा :
समुचे देशमें शिक्षाका प्रचार-प्रभाव सभी स्तर पर हुआ है । शैक्षिक संस्थानोंकी स्थापना राज्य, जिला और तहसील स्तर तक की गई है । किन्तु देशकी बढती हुई जनसंख्याके कारण सभी स्तरके शैक्षिक संस्थानों में विद्यार्थियों को प्रवेश देनेके लिए दिक्कत का अनुभव कर रहे है । स्थल, समय, व्यवसाय और कभी-कम उम्रके कारण शैक्षिक संस्थामें प्रवेश प्राप्त नहीं करनेवाले विद्यार्थियों - व्यक्तियोंको खूले विश्व विद्यालय जरुरी अवसर प्रदान कर रहे है ।

विदेशों में एसे खुले विश्व विद्यालयोंकी स्थापना हुई है । और सभी विश्व विद्यालय सफलतापूर्ण कार्य कर रहे है । भारतमें भी ''इन्दिरा गांधी नेशनल ओपन युनिवर्सिटी'' न्यू दिल्ही के जरिए १९८५ से समुचे देशमें अपने केन्द्रों के जरिए शिक्षा देनेका कार्य शुरु किया गया है । गुजरात में ''डॉ बाबासाहब आंबेडकर ओपन युनिवर्सिटी'' के जरिए भी यह शिक्षा दी जाती है ।

इस खूले विश्वविद्यालयों के विचार अनुसार शिक्षा सभीके लिए सुलभ होनी चाहिए, व्यक्तिको हमेशा प्रवृत्त रखनेवाली शिक्षा पद्धति होनी चाहिए तथा समाज और जीवन साथ साथ चलता रहे ऐसी सुसंगत शिक्षा होनी चाहिए । जो विद्यार्थी अपने ज्ञानकी क्षितिजका फैलाव करना चाहते है उन सबको प्रवर्तमान जगतमें विकासमान शिक्षा पद्धतियोंके जरिए अपनी शिक्षाको अध्यतन रखना चाहते है उन सबके लिए इस खुले विश्व विद्यालय आशीर्वाद रुप बन सकते है ।

सार्वजनिक ग्रन्थालयोंमें ये सभी विद्यार्थियोंको मदद करने हेतु दृश्य-श्राव्य साधन-सामग्री जैसेकि, टी.वी., टेपरिकार्डर केसेट कम्प्यूटर और ईन्टरनेटकी सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए इसलिए खुले विश्वविद्यालयों से संवाद करके अभ्यास संबंधित वाचन सामग्री प्राप्त करके सार्वजनिक ग्रन्थालयों में रखनी जरुरी है । जिसका उपयोग करनेवाले विद्यार्थियोंको समय मर्यादा में उपलब्ध करा सके ।

दूरवर्ती शिक्षा सार्वजनिक ग्रन्थालयों के अलावा अन्य कोई संस्थान न दे सके । दूरवर्ती शिक्षा के लाभार्थियों के लिए ग्रन्थायलों को अलग ग्रान्ट देकर सार्वजनिक ग्रन्थालयों में ही अध्ययन के लिए एक अलग विभाग बनाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को ग्रन्थालयमें ही संदभ साहित और इच्छनीय वातावरण मिल सके । तय किए हुए स्थल और क्षेत्र के विद्यार्थियोंको मिलनेकी उत्तम जगह सार्वजनिक ग्रन्थालय ही है । जहाँ इस शिक्षाके लिए तय किए हुए शिक्षक समयपत्रक के मुताबिक मार्गदर्शन दे सके । सार्वजनिक ग्रन्थालयों को जानकारीका सेवाकार्य क्षेत्र विकसित करके खुदकी पहचान बनाना जरुरी है । इसलिए ग्रन्थालयोंको ज्ञानप्रदान करने वाले यानि कि ज्ञान परामर्शकका काम भी करना पडेगा । ग्रन्थालयोंको ज्ञान विस्फोट से पैदा हुए ज्ञान वितरण के लिए हमेशा जागृत और सजग रहना जरुरी हो गया है ।

सार्वजनिक ग्रन्थालयों और ग्रन्थपालों को परंपरा और निर्जीव तथा चेतनहीन ग्रन्थालय प्रणालियोंको छोडकर शैक्षणिक क्रान्तिका अभियान करनेकी मेहनत करनी बहुत ही जरुरी है । तब ही शिक्षाके जरिए मानवविकासकी उन्नतिका आंदोलन सफल बन सकेगा ।

गुजरात राज्य में कार्यरत १२० सरकारी सार्वजनिक ग्रन्थालय जो जिला और तहसिल पर कार्यरत है और ४००० से ज्यादा अनुदानित सार्वजनिक ग्रन्थालयों को इस कार्यक्रमके अमल के लिए ग्रान्ट दी जाए तो गुजरात राज्य में कार्यरत सार्वजनिक ग्रन्थालयों भी दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम के सही अमलीकरण में अपना उत्कृष्ट प्रदान सही मायने में दे सकेंगे ।